HISTORY
3

इसके अबुल फज़ल ने न मुसलमानों की समाजिक रिवाजों, साहित्य कानून तथा दर्शन के बारे में लिखा है बल्कि हिंदुओं, जैनियों तथा अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के बारे में भी लिखा है। इसमें प्रसिद्ध विदेशी यात्री, मुस्लिम संत तथा सूफीयों के बारे में भी वर्णित है।

अबुल फज़ल ने समकालीन भाषा से अपनी रचना लिखी। यह बोलने तथा लय वाली भाषा में लिखी गई क्योंकि यह पुस्तके बोलकर सुनाई जाती थी। वी० ए० स्मिथ लिखते है की लेखक ने अपनी मालिक की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की है। इसमें कुछ त्रुटियाँ होते हुए भी अकबरनामा को सम्राट के शासनकाल के इतिहास का आधार माना जाना चाहिए। इसमें वर्णित तिथियाँ, निजामउद्दीन तथा बदायुनी द्वारा लिखी गई पुस्तक से अधिक विश्वसनीय है।

बादशाहनामा का लेखक अब्दुल हमीद लाहौरी था। इसमें शाहजहाँ के शासनकाल से पहले बीस वर्षों का इतिहास का वर्णन है। शाहजहाँ ने अब्दुल हमीद लाहौरी को अपने शासनकाल का इतिहास अकबरनामा की तरह से लिखने को कहा

अब्दुल हमीद लाहौरी ने अबुल फजल की शैली के अनुसार लिखना आरम्भ किया परन्तु कुछ समय पश्चात इसने लिखना छोड़ दिया।

बादशाहनामा सरकारी तौर पर तीन खंडों में लिखा गया है। प्रत्येक खंड में दस चंद्रमा वर्षों के इतिहास का वर्णन है। इसने शाहजहाँ के शासनकाल के बीस वर्षों का इतिहास लिखा। इन प्रस्तावों का शाहजहाँ के वजीर सादुल्लाह खाँ ने पुनर्वाचन किया। वृद्ध हो जाने के कारण अब्दुल हमीद लाहौरी शाहजहाँ का अगले वर्षों का इतिहास नहीं लिख सका इसके लिखने का यह कार्य इतिहासकार मुहम्मद वारिस ने किया। इसने शाहजहाँ द्वारा बनाए गए स्मारकों का वर्णन स्पांयुमित किया है।

कलकत्ता में 1784 ई० में विलियम जोन्स द्वारा स्थापित किए गए एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल ने भारत की बहुत सी पांडुलिपियों को शोध करने, छापने तथा अनुवाद करने का कार्य किया। अकबरनामा तथा बादशाहनामा के शोधित संस्करण को उन्नीसवीं शताब्दी में इसी संस्था ने छापा।
हेनरी बेवरिज ने बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में अंग्रेजी अनुवाद किया।
परन्तु बादशाहनामा का बहुत थोड़ा भाग ही अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। पूर्ण बादशाहनामा का अंग्रेजी में अनुवाद अभी तक नहीं किया गया।